

CSIR in Media



News Bulletin
16th to 20th January 2020



Scientists develop new Chrysanthemum variety 'Shekhar'

CSIR-NBRI



Onset of winters bring blooming season for flowers but with dropping temperature the flowers crop also suffer. To keep the flowering season lasts longer scientists keep trying to develop flower varieties that can withstand extreme winters. In such an effort scientists at National Botanical Research Institute (NBRI) have developed and released a new variety of Chrysanthemum that blooms during late December to mid-February and named it 'Shekhar'. Dr. Shekhar Mande, Director General, Council of Scientific and Industrial Research (CSIR) released this new variety of Chrysanthemum during the two-day Annual Rose and Gladiolus Show organized by CSIR-National Botanical Research Institute, Lucknow.

20th January, 2020

This is a late blooming decorative type, floriferous chrysanthemum variety which bears mauve colored flowers. It attains the height up to 60 centimeters and have capitulum diameter (diameter across) up to 9-9.5 centimeters. This particular variety is radically diverging and has semi-quill florets that give the flower a unique dome-shaped crown like appearance. "The new variety has been developed through mutation induction by gamma irradiation of 'Su-Neel' which is its somatic parent variety" told Dr Arvind Jain, senior scientist, NBRI. Dr. Arvind also told that Gladiolus, rose and gerbera are more popular in floriculture, but chrysanthemum also holds an important place. "Due to its diverse appearance, it is in high demand and people like to plant flowers in their gardens and homes. If cuttings of chrysanthemum are planted at a distance of half an inch, then about one thousand plants can be planted in a radius of one square meter", he said. If these plants are sold at the rate of 10 rupees, then in a very short time, about 10 thousand rupees can be earned, said Dr Arvind.

Other major late-blooming varieties of chrysanthemum include CSIR-75, Ashakaran, Pooja, Vasantika, Maghi White, Gauri and Gulal, the flowering season is from mid-December to February. Kundan, Jayanti, Himanshu and Pukhraj are common season varieties of chrysanthemum. These usually flower between November and December. Similarly, the early varieties of chrysanthemum include Vijay, Vijay Kiran and NBRI-Kaul, mainly the flowering season is month of October.

A special feature of chrysanthemum is that it can be planted twice in a season and it is excellent as a potted plant. Chrysanthemums, the tropical flowers belong to the Asteraceae (Compositae) family, which is one of the largest families of flowering plants with over 1,000 genera and about 20,000 species.

Chrysanthemums were originally grown in the Eurasian region.

CSIR-NBRI

20th January, 2020

फूलों से फैली पुरस्कार की खुशबू

सीएसआइआर-एनबीआरआई में गुलाब एवं ग्लेडिओलस पुष्प प्रदर्शनी का समापन

फूलों का मेला सजा तो क्या आम क्या खास, हर कोई इस गुलशन के चहकते गुलों को देखने उमड़ पड़ा। मेले में बागवानों की मेहनत देखी जा सकती थी, जिन्होंने जी-जान लगाकर अपने समर्पण की खाद से इन फूलों को संवारा था। गुलाब एवं ग्लेडिओलस पुष्प प्रदर्शनी की बढ़तीलत सीएसआइआर-एनबीआरआई परिसर खुशबू और रंगत से दो दिन तक खिला रहा। अंतिम दिन रविवार को पुरस्कार वितरण के साथ प्रदर्शनी का समापन हुआ। हालांकि हर फूल अपने में नायाब था, लेकिन स्वागत को निभाते हुए सभी प्रतिभागियों में से कुछ को विजेता चुना गया।

राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान की ओर से आयोजित पुष्प प्रदर्शनी में शिरकत करने आए बागवानों को कद्रदान मिले तो मानो उनकी मेहनत सफल हो गई। प्रदर्शनी में भाग लेने वाले 291 प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। इनमें से 99 प्रथम, 104 द्वितीय और 88 सांत्वना पुरस्कार शामिल थे। 26 को रनिंग चैलेंज ट्रॉफी प्रदान की गई। प्रदर्शनी में 69 वर्गों के तहत 647 प्रविष्टियों के बीच उत्कृष्टता की जंग थी। दिल्ली के वैज्ञानिक अनुसंधान परिषद के महानिदेशक डॉ.शेखर सी मांडे ने विजेताओं को पुरस्कृत किया।

एचएएल को सर्वाधिक पुरस्कार: फैजाबाद रोड के एचएएल को सबसे अधिक 40 पुरस्कार मिले। इनमें 13 प्रथम, 18 द्वितीय और नौ सांत्वना पुरस्कार शामिल हैं। छावनी परिषद को मिले 22 पुरस्कारों में आठ प्रथम, नौ द्वितीय और पांच सांत्वना पुरस्कार थे। टाटा मोटर्स को 19 पुरस्कार मिले जिसमें आठ प्रथम, पांच द्वितीय और छह सांत्वना पुरस्कार हैं। राजकीय उद्यान आलमबाग को 10 प्रथम, सात द्वितीय और एक सांत्वना पुरस्कार समेत कुल 18 पुरस्कार मिले। एचएएल अमेटी को मिले 13 पुरस्कारों में आठ प्रथम, चार द्वितीय और एक सांत्वना पुरस्कार शामिल हैं।

सेल्फी का दिखा कैज: प्रदर्शनी के



राणा प्रताप मार्ग स्थित राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान में आयोजित गुलाब एवं ग्लेडिओलस प्रदर्शनी के समापन समारोह में विजेताओं के साथ (मध्य में) दिल्ली के वैज्ञानिक अनुसंधान परिषद के महानिदेशक शेखर सी मांडे • जागरण



प्रदर्शनी के समापन समारोह में फूलों की फोटो विलक करते सीएसआइआर के निदेशक आलोक धावन • जागरण

समापन के दौरान के युवाओं में फूलों के साथ सेल्फी लेने का क्रेज देखते ही बन रहा था। परिवार के साथ भी पुष्पप्रेमियों ने फोटो खिंचवाई। पुरस्कार पाने वाली

आलमबाग की शिप्रा शर्मा ने बताया कि घर पर गमलों में फूल और पौधे लगा रखे हैं। बोगनवेलिया और सूरजमुखी समेत तमाम रंग-बिरंगे फूल घर को

महकाते हैं। फूलों के साथ ही फल और सब्जियां भी लगा रखी हैं। अरुण कुमार, महेश कुमार जायसवाल और ठाकुरगंज के मिर्जा मुक्तदर बेग समेत

कई प्रतिभागियों को पुरस्कार दिया गया। मालियों का रहा योगदान: टाटा मोटर्स के पी. मुखर्जी को शील्ड मिली तो उन्होंने इसे अपने मालियों को समर्पित

कर दिया। उन्होंने कहा कि हम लोग तो कभी-कभी पौधों की देखभाल करते हैं, लेकिन मालियों को दिन-रात फिक्र रहती है। कहा, घर में किचन गार्डन है,

जहां पौधों के साथ कुछ देर बिताता हूं। जिंदगी में सुकून का अहसास कराते फूल आपको खुशियों की अनुभूति भी कराते हैं।

● फूल-पौधों के साथ वक्त गुजारना और बागवानी अपने आप में ही एक अच्छा व्यायाम है

● फूलों और हरियाली के बीच रहने से नींद न आने की समस्या भी दूर हो जाती है

● मानसिक स्वास्थ्य के लिए बेहतरीन बागवानी, हमारे अंदर सृजन की भावना भरती है



प्रदर्शनी में आकर्षण का केंद्र रहे ये फूल • जागरण

काम के साथ सुकून देते हैं फूल

रानी उपसम को लाल गुलाब के साथ ही सुलभ तिवारी मेमोरियल चैलेंज ट्रॉफी भी मिली। उन्होंने बताया कि जेपी दुबे के मार्ग निर्देशन में फूलों की देखरेख करती हूं। काम के साथ सुकून के दो पल पाने के लिए फूलों से बात करना अच्छा लगता है। सुबह-सुबह गुलाब को देखना और फिर उसकी खुशबू पाने की उत्सुकता बागवानी के लिए उत्साहित करती है।

तीन साल से कर रही हूं बागवानी

कल्याणपुर निवासी शिवानी सिंह ने किश्चियन कॉलेज की तरफ से फूल सजावट में शील्ड जीती है। घर में वह पिछले तीन साल से बागवानी कर रही हैं। गार्डन के साथ ही पूरे घर को फूलों और पौधों से सजा रखा है। इनके घर पर गुलाब के साथ ही गुलदाउदी, पिटुनिया और डहेलिया आदि फूलों की किस्में हैं।

ऐसे रोपें पौधे

- अगर गमले में पौधा लगाना है तो गमले के तल में, जहां पानी निकलने की जगह बनी होती है वहां पॉट के टूटे हुए टुकड़े या छोटे पत्थर रखें। ताकि पानी के साथ मिट्टी का पोषण बाहर न निकले।
- मिट्टी और खाद का मिश्रण गमले में भरें और पौधा रोपें।
- गमले का एक तिहाई हिस्सा खाली रहना चाहिए ताकि पानी डालने पर इसमें ऊपर से मिट्टी और खाद बहकर न निकले।
- जब भी कोई बीज रोपें, इसके आकार की दोगुना मोटी मिट्टी के नीचे तक ही भीतर डालें। ऐसा न करने पर इसका अंकुर फूटने में लंबा वक्त लगेगा।

Published in:
Dainik Jagran

CSIR-NBRI

19th January, 2020

city celebration उत्सव अमर उजला

एनबीआरआई में दो दिवसीय गुलाब एवं ग्लेडियोलस प्रदर्शनी शुरु

रंग-बिरंगे गुलाबों की सजी बगिया

माई सिटी रिपोर्टर

लखनऊ। चटख लाल रंग के गुलाब, पीले और गुलाबी गुलाबों के अलावा करीने से कतारों में सजे ग्लेडियोलस की बगिया। मचलते व मुस्कुराते नन्हे-मुन्नों ने फूलों को टक्कर दी तो बड़े मोबाइल सेल्फी के लिए बेकरार रहे। सीएसआईआर एनबीआरआई में दो दिवसीय गुलाब एवं ग्लेडियोलस प्रदर्शनी शनिवार से सेंट्रल लॉन में शुरू हुई। दोपहर बाद प्रदर्शनी में लोग जुटे। हालांकि प्रदर्शनी के पहले दिन कंपाते मौसम का असर भी दिखा। 650 प्रदर्शकों से सजी प्रदर्शनी सुबह दस बजे शाम छह बजे तक आम दर्शकों के लिये खुलेगी। शाम को पुरस्कार वितरण होगा। प्रदर्शकों के लिए 26 रनिंग चैलेंज शील्ड, कप, ट्रॉफी यों के लिये 69 प्रदर्शकों से कुल 647 एंट्री आई। जिनमें विभिन्न सरकारी, अर्द्ध सरकारी विभाग, स्वायत्त निकाय, व्यक्तिगत उत्पादक, महिलायें, नर्सरियों के प्रतिभागी शामिल रहे।

मुस्कुराते नन्हे-मुन्नों ने फूलों को दी टक्कर, बड़ों ने ली सेल्फी

69 प्रदर्शकों से कुल 647 एंट्री शामिल

विजेताओं के नाम

प्रदर्शनी के सर्वोत्तम एचटी दुरंगे गुलाब, महेश कुमार जायसवाल एचएएल अमेटी। प्रदर्शनी के सर्वोत्तम ग्लेडियोलस स्पाइक, मिर्जा मुक्तदिर बेग ठाकुरगंज। प्रदर्शनी के सर्वोत्तम एचटी लाल गुलाब, रानी उपसम होटल क्लार्क अवध। प्रदर्शनी के सर्वोत्तम एचटी गुलाब, महेश कुमार जायसवाल एचएएल अमेटी। प्रदर्शनी के सर्वोत्तम सुगंधित हाइब्रिड टी गुलाब छावनी परिषद् कार्यालय कैट लखनऊ। प्रदर्शनी के सर्वोत्तम रंगीन धारीदार एचटी गुलाब, महेश कुमार कोरवा, एचएएल अमेटी। प्रदर्शनी के सर्वोत्तम एचटी पीले गुलाब, रानी उपसम होटल क्लार्क अवध। प्रदर्शनी के सर्वोत्तम गुलाबी गुलाब, महेश कुमार जायसवाल एचएएल अमेटी। प्रदर्शनी के सर्वोत्तम भारतीय प्रजनित हाइब्रिड टी गुलाब, महाप्रबंधक एचएएल अमेटी।

आप भी खरीद सकते हैं विभिन्न प्रजातियों के पौधे

दो दिन तक चलने वाली प्रदर्शनी में पहले दिन मौसम का असर भी दिखा। भूप खिली न होने से पहले सत्र में कम संख्या में लोग जुटे। इस दौरान विशेषज्ञों ने तमाम कैटेगरी में सिंगल कट गुलाब, ग्लेडियोलस आदि का निरीक्षण कर बेस्ट एंट्री चुनी। गुलाब के फूलों की माला से संवरे घर, मंदिर, गणपति द्वार की सजावट खास पसंद की गई। पौधों के द्वारा प्रदूषण प्रबंधन स्टाल पर भी लोगों ने रुचि दिखाई। मंडप में एनबीआरआई पवेलियन में गुलाब व ग्लेडियोलस कट फ्लावरर्स, विकसित प्रौद्योगिकियों एवं हर्बल उत्पादों को भी लोगों ने सराहा। संस्थान की ओर से वनस्पति विज्ञान के किए जा रहे शोध एवं विकास कार्यों की भी प्रदर्शनी लगी। प्रदर्शनी के संयोजक डॉ. एसके तिवारी ने बताया कि आम जनता हेतु पौधों की विभिन्न प्रजातियां यहां बिक्री हेतु उपलब्ध हैं। रविवार शाम 4 बजे औद्योगिक अनुसंधान परिषद दिल्ली के महानिदेशक शेखर सी पांडे मुख्य अतिथि रहेंगे, विजेताओं को पुरस्कार देंगे।




Published in:
Amar Ujala

Basic and applied research must be balanced: CSIR DG

CSIR

19th January, 2020

Those who lead scientific institutions must ensure a balance between basic and applied research, director general of Council of Scientific and Industrial Research (CSIR) Shekhar C Mande said at an HRD ministry-driven leadership for academicians programme. The event was attended by professors of IIT and heads of department of various institutes. “A basic research that may not appear useful today could be of paramount importance later. Look at ‘Raman effect’, C V Raman’s pioneering work on scattering of light in 1930.

At the time, the importance was purely academic. But it turned out to be a significant tool for analysing the composition of liquids, gases and solids. In 1998, it was designated a National Historic Chemical Landmark by the American Chemical Society in recognition of its significance,” Mande pointed out, adding that striking a balance between conventional and applied research was of particular importance for a country like India.

All India Council for Technical Education chairman Anil Sahasrabudhe, who also addressed the future leaders of scientific institutions, stressed on the importance of social networking to tap into the alumni resource. “In today’s world, one has to realise the importance of social platform and power of networking to connect with the alumni who can provide support in different ways.

For any institute to develop, one needs a pool of scientists. The alumni is a key component of this pool. Not only can they bring in resources, they can also provide a dispassionate assessment of the institute by viewing its functioning from a distance,” he said.

Networking, Sahasrabudhe said, was also necessary to collaborate with industry, corporates and other institutes. “Exchange of knowledge is key to development, not just between institutes in India but between Indian and international institutes,” he added.

The AICTE chairman also urged laboratories to step forward and become centres to incubate students’ ideas as well as motivate and inspire them. “Give students the opportunity to work in laboratories,” he said.

Published in:

[The Times of India](#)

CSIR-NML

19th January, 2020

Students of MNPS get exposures of Research Environment at NML

Mail News Service

Jamshedpur, Jan. 18: A group of 62 students of Std. IX to XI from Motilal Nehru Public School, Sakchi accompanied by two teachers Mrs. Sampa Banerjee and Mrs. Ritu Sachdeva visited at CSIR-National Metallurgical Laboratory, Jamshedpur and interacted with scientists and research scholars this morning under the aegis of Jigyasa-NML-School Interactive programme. The students were thrilled to visit the laboratory and interact with working group.

The programme was scheduled for two and half hours, Dr.P.N. Mishra, Principal Scientist, begin the programme with

welcome address and introduced students with the members of SNIP programme and further, he discussed about NML and its contribution towards the proper and gainful utilization of natural resources such as ores, minerals for developing different types of metals & alloys. Dr. S.K. Mandal, chief scientist and coordinator of the programme, discussed fundamentals of science and its various branches to inculcate interest towards science and request to pursue carrier in science for further study. Dr. A.K. Sahu proposed the vote of thanks.

Students further visited at creep testing units of Materials Testing &



Evaluation Division, Mr. Prabir Kumar Roy, Sr. Technical Officer explained about the fatigue, creep, fractures prevailing in different types of industrial components like boiler,

reformer tubes, pressure vessel etc. Students get exposure of different machine like Servo Hydro Testing Machine, Servo Electrical Machine and furnace.

Students were impressed

to observed various equipment and facilities available at the Analytical and applied Chemistry Division. Ms. Soni Jha, nicely explained about its role and discussed how this unit performing chemical

analysis of minerals, ores, slag, water.

During the concluding session, teachers and students requested for their next visit to the laboratory for gain more knowledge. Teachers expressed their views and was satisfied to know about the consistent effort and research emphasis given in various sectors for the ultimate development of our society. They also extend thanks to the Ministry of Human Resource Development, Govt. of India, to launch "Jigyasa Programme" tie up with council of Scientific & Industrial Research and they were extremely delighted to visit the National Metallurgical Laboratory, Jamshedpur.

Published in:
Avenue Mail

CSIR-NML

18th January, 2020

विद्यार्थियों ने एनएमएल का किया दौरा



जमशेदपुर। सीएसआईआर एनएमएल का शुक्रवार को जिज्ञासा कार्यक्रम के तहत साकची स्थित एमएनपीएस स्कूल की कक्षा नौवीं तथा 11वीं के 62 विद्यार्थियों

समेत दो शिक्षकों के एक दल ने दौरा किया। कार्यक्रम में स्कूली छात्रों ने वैज्ञानिकों तथा अनुसंधानकर्ताओं से एनएमएल तथा अनुसंधान के बारे में जाना।

Published in:
Hindustan

CSIR-NML

18th January, 2020

सीएसआइआर-एनएमएल में शिविर का समापन



जमशेदपुर. सीएसआइआर-एनएमएल में भारत सरकार के निर्देशन में स्किल ट्रेनिंग इनिशिएटिव प्रोग्राम चलाया जा रहा है. इसके तहत 13 जनवरी से शुरू पांच दिवसीय शिविर का समापन शुक्रवार को हुआ. जिसमें बंगाल के पुरुलिया पॉलिटेक्निक के कुल 80 छात्र-छात्राओं को एनएमएल में इ-वेस्ट मैनेजमेंट की ट्रेनिंग दी गयी. इस दौरान उन्हें एनएमएल के वैज्ञानिकों ने पर्यावरण को सुरक्षित रखने से जुड़ी अहम बातें बतायी. इस दौरान बताया गया कि किस प्रकार इ-वेस्ट मैनेजमेंट से न सिर्फ पर्यावरण को संरक्षित किया जा सकता है, बल्कि इसके जरिये रोजगार का सृजन भी हो सकता है. एनएमएल के प्रिंसिपल साइंटिस्ट डॉ एसके साहू, चीफ साइंटिस्ट डॉ मीता तरफदार समेत कई अन्य वैज्ञानिकों ने छात्र-छात्राओं को इ-वेस्ट से जुड़ी बातें बतायी.

Published in:

Prabhat Khabar

CSIR-CSIO

18th January, 2020

CSIO transfers technology to industry

TRIBUNE NEWS SERVICE

CHANDIGARH, JANUARY 17

The Central Scientific Instruments Organisation (CSIO) here today transferred the knowhow for manufacturing “3D Printed Patient Specific Medical Implants” to a private industry for commercial production and marketing.

Patient Specific Implant (PSI) is required when current commercially available implants for the site are either not available or do not fulfil the anatomical requirement. In those cases, PSI is designed for one particular patient from the CT scan data and then manufactured using 3D printing technology using titanium or other biocompatible materials.

The requirement may

3D PRINTED PATIENT SPECIFIC MEDICAL IMPLANTS

“The PSI was developed at the CSIO’s Innovative Additive Research and Manufacturing Laboratory (iARM), which is having all facilities related to design, manufacturing and testing of standards as well as patient-specific orthopaedic and maxillofacial implants, surgical models, surgical tools, custom-made prosthetics, tissues engineering and organ printing.”

Prof RK Sinha, DIRECTOR, CSIO

arise due to trauma, diseases such as cancer or fungal infection or revision surgeries. The PSI is also beneficial for joint salvaging surgeries where human joints are good but the bone near joints is infected or traumatised. The CSIO has developed the technology and expertise of PSI development for load bearing and non-load

bearing anatomical sites.

Prof RK Sinha, Director, CSIO, said the PSI was developed at the CSIO’s Innovative Additive Research and Manufacturing Laboratory (iARM), which is having all facilities related to design, manufacturing and testing of standards as well as patient-specific orthopaedic and maxillofacial implants, sur-

gical models, surgical tools, custom-made prosthetics, tissues engineering and organ printing.

Vijay Kumar Meena, Principal Scientist, CSIO, who has developed the knowhow of the PSI, said he and his team were working on development of technologically advanced 3D printed implants in India. The patient specific implants developed in iARM Lab were successfully implanted in patients at prestigious government and private medical institutes. The medical applications of 3D printing are continuously increasing day by day. Digital healthcare, including imaging-based technologies such as CT scan, MRI and ultrasound and medical implants, will sooner or later become routine.

Published in:

The Tribune

CSIR-CSIO

18th January, 2020

जागरण विशेष
चंडीगढ़ सीएसआइओ के साइंटिस्टों ने किया कमाल, आज खास इम्प्लांट टेक्नोलॉजी होगी निजी कंपनी को ट्रांसफर

एक्सीडेंट से शरीर के बिगड़े हिस्से को फिर मिलेगी खूबसूरती

डॉ. सुमित सिंह थोराण • चंडीगढ़

एसिड अटैक की शिकार युवती पर आधारित फिल्म अभिनेत्री तैपिका पादुकोण की फिल्म आजकल काफी चर्चा में है। एक घटना ने एसिड पीड़िता लड़की की जिंदगी को पूरी तरह से बदल दिया, यह कोई अकेली घटना नहीं है, देश में हर साल ऐसे हजारों मामले होते हैं। लेकिन अब ऐसे मामलों की पीड़िता और किसी भी बड़े हादसे के कारण शरीर के अंग खोने वालों के लिए अच्छी खबर है। अब ऐसे लोगों को उपचार के बाद पहले जैसा व्यक्तित्व (पर्सनेलिटी) मिल सकेगा। इलाज के लिए विदेश जाने या महंगी सर्जरी कराने की जरूरत भी नहीं पड़ेगी।

चंडीगढ़ के सेक्टर-31 स्थित केंद्रीय वैज्ञानिक उपकरण संगठन (सेंट्रल साइंटिफिक इंस्ट्रुमेंट्स आर्गनाइजेशन, सीएसआइओ) और सीएसआइआर की लैब में खास एक्सीडेंटल पेसेंट्स के लिए खास उद्दी प्रीडेंट स्पेसिफिक मेडिकल इम्प्लांट्स (पीएसआइ) तकनीक विकसित की है। जिससे हादसों में घायल लोगों के खराब अंगों को फिर से विशेष तकनीक से पहले जैसा बनाकर उन्हें इम्प्लांट किया जा सकेगा। शुक्रवार को सीएसआइओ मुंबई की निजी कंपनी फोर्ब्स एंड कंपनी को यह तकनीक हस्तांतरित की जाएगी।



चंडीगढ़ : सीएसआइओ द्वारा ईजाद की गई नई तकनीक उद्दी प्रीडेंट स्पेसिफिक मेडिकल इम्प्लांट्स (पीएसआइ) से तैयार इक्विपमेंट्स • सौजन्य : सीएसआइओ

आविष्कार

- सीएसआइओ ने उद्दी प्रीडेंट स्पेसिफिक मेडिकल इम्प्लांट्स (पीएसआइ) तकनीक विकसित की
- अब देश में ही मिलेगा लोगों को सस्ता इलाज, विदेश जाने की नहीं पड़ेगी जरूरत
- एसिड अटैक में भी कारगर, पहले जैसा हो जाएगा शरीर

नई बात क्या : अब विदेशों से एक तिहाई सस्ता होगा इलाज

सीएसआइओ द्वारा तैयार नई तकनीक में एक्सीडेंट पीड़ितों के लिए की ऊपरी स्किन ही नहीं, उसके बेस (हड्डियों के स्ट्रक्चर) को भी बदला जा सकेगा। अगर चेहरे का एक हिस्सा टूट गया है तो दूसरे हिस्से को भी पहले जैसा बना दिया जाएगा। सीएसआइओ के सीनियर साइंटिस्ट डॉ. विजय कुमार मीना द्वारा विकसित इस तकनीक से इलाज में विदेश से एक तिहाई कम खर्च लगेगा। हर साल देश में चार लाख लोग हिम ट्रांसप्लांट कराते हैं जोकि

2020 तक इसकी संख्या छह लाख पहुंच जाएगी। पीजीआई सहित अन्य मेडिकल इंस्टीट्यूट में इस तकनीक का सफल प्रयोग रहा है। डॉ. सेनी ने बताया कि हर रोज देश में हजारों लोग एक्सीडेंट के कारण अपने शरीर के कई अंगों को खो देते हैं। नई तकनीक से वह पहले जैसे आत्मविश्वास की जिंदगी जी सकेंगे। एसिड अटैक, कैन्सर आदि के कारण हड्डियां कमजोर या टूट जाती हैं। नई तकनीक से हड्डियों के टांचे को बदला जा सकेगा।

सीएसआइओ साइंटिस्ट ने

एक्सीडेंट पीड़ित के लिए स्टैंडर्ड इम्प्लांट की खास तकनीक तैयार की है। करीब एक साल की कड़ी मेहनत के बाद यह संभव हुआ है। कैन्सर पीड़ित या एसिड अटैक पीड़ितों के लिए भी यह रामबाण साबित होगा। अब जरूरतमंदों को विदेश जाने की जरूरत नहीं पड़ेगी। इन्हें काफी कम खर्च में यह सुविधा देश में ही मिल सकेगी।

- डॉ. सुरेंद्र सिंह सेनी, प्रमुख बिजनेस इनोवेटिव एंड प्रोजेक्ट प्लानिंग, सीएसआइओ, चंडीगढ़



Published in:
Dainik Jagran

CSIR-CSIO

18th January, 2020


3ਡੀ ਯੰਤਰ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਸਦਕਾ ਪਹਿਲਾਂ ਜਿਹਾ ਰੂਪ ਮਿਲ ਸਕੇਗਾ।

ਸਰੀਰ ਦਾ ਨੁਕਸਾਨਿਆਂ ਹਿੱਸਾ ਲੈ ਸਕੇਗਾ ਪਹਿਲਾਂ ਵਰਗਾ ਰੂਪ

ਜੇਐੱਨਐੱਨ, ਚੰਡੀਗੜ੍ਹ : ਤੇਜ਼ਾਬੀ ਹਮਲੇ ਦੀ ਸ਼ਿਕਾਰ ਕੁੜੀ 'ਤੇ ਅਧਾਰਤ ਫਿਲਮ ਛਪਾਕ ਅੱਜਕਲ੍ਹ ਚਰਚਾ ਵਿਚ ਹੈ। ਇਸ ਘਟਨਾ ਨੇ ਤੇਜ਼ਾਬੀ ਹਮਲੇ ਵਿਚ ਪੀੜਤ ਕੁੜੀ ਦੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਨੂੰ ਪੂਰੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਬਦਲ ਦਿੱਤਾ ਹੈ। ਇਹ ਕੋਈ ਇੱਕੋ ਇਕ ਘਟਨਾ ਨਹੀਂ ਹੈ, ਦੇਸ਼ ਵਿਚ ਹਰ ਵਰ੍ਹੇ ਅਜਿਹੇ ਹਜ਼ਾਰਾਂ ਮਾਮਲੇ ਵਾਪਰਦੇ ਹਨ। ਹੁਣ ਅਜਿਹੇ ਮਾਮਲਿਆਂ ਦੀ ਪੀੜਤਾ ਅਤੇ ਕਿਸੇ ਵੱਡੇ ਹਾਦਸੇ ਕਾਰਨ ਸਰੀਰ ਦੇ ਅੰਗ ਗੁਆਉਣ ਵਾਲੇ ਲੋਕਾਂ ਲਈ ਚੰਗੀ ਖ਼ਬਰ ਹੈ। ਅਜਿਹੇ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਇਲਾਜ ਮਗਰੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਵਰਗੀ ਸ਼ਖ਼ਸੀਅਤ ਹਾਸਿਲ ਹੋ ਸਕੇਗੀ। ਇਲਾਜ ਲਈ ਵਿਦੇਸ਼ ਜਾਣ ਜਾਂ ਮਹਿੰਗੀ ਸਰਜਰੀ ਕਰਾਉਣ ਦੀ ਜ਼ਰੂਰਤ ਨਹੀਂ ਪਵੇਗੀ। ਚੰਡੀਗੜ੍ਹ ਦੇ ਸੈਕਟਰ 31 ਸਥਿਤ ਕੇਂਦਰੀ ਵਿਗਿਆਨਕ ਉਪਕਰਨ ਸੰਗਠਨ (ਸੀਐੱਸਆਈਓ) ਤੇ



ਡਾ. ਸੁਰਿੰਦਰ ਸਿੰਘ ਸੈਣੀ

ਸੀਐੱਸਆਈਓ ਦੀ ਲੈਬ ਵਿਚ ਖ਼ਾਸ ਕਿਸਮ ਦੇ ਪੀੜਤਾਂ ਤੇ ਮਰੀਜ਼ਾਂ ਲਈ ਉਚੇਰੀ 3ਡੀ ਪ੍ਰੀਡਿਕਟ ਪੇਸ਼ੈਂਟ ਸਪੈਸੀਫਿਕ ਮੈਡੀਕਲ ਇੰਪਲਾਂਟਸ (ਪੀਐੱਸਆਈ) ਤਕਨੀਕ ਵਿਕਸਤ ਕੀਤੀ ਹੈ। ਇਸ ਦੇ ਸਦਕਾ ਹਾਦਸਿਆਂ ਵਿਚ ਜ਼ਖਮੀ ਹੋਣ ਵਾਲੇ ਫੱਟੜ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਖ਼ਾਸ ਤਕਨੀਕ ਸਦਕਾ ਪਹਿਲਾਂ ਜਿਹੇ ਰੂਪ ਵਿਚ ਢਾਲਿਆ ਜਾ ਸਕੇਗਾ। ਸੁੱਕਰਵਾਰ ਨੂੰ ਸੀਐੱਸਆਈਓ ਮੁੰਬਈ ਦੀ ਨਿੱਜੀ ਕੰਪਨੀ ਫੋਬਸ ਐਂਡ ਕੰਪਨੀ ਨੂੰ ਇਹ ਤਕਨੀਕ ਸੌਂਪ ਦਿੱਤੀ ਜਾਵੇਗੀ। ਇਸ ਤਕਨੀਕ ਸਦਕਾ ਵਿਦੇਸ਼ਾਂ ਤੋਂ ਸਸਤਾ ਇਲਾਜ ਸੰਭਵ ਹੋ ਸਕੇਗਾ। ਇਵੇਂ ਹੀ ਡਾ. ਸੁਰਿੰਦਰ ਸਿੰਘ ਸੈਣੀ, ਮੁਖੀ ਬਿਜਨਸ ਇਨੋਵੇਟਿਵ ਐਂਡ ਪ੍ਰਾਜੈਕਟ ਪਲਾਨਿੰਗ ਨੇ ਦੱਸਿਆ ਕਿ ਹਾਦਸੇ ਮਗਰੋਂ ਸਰੀਰ ਦੇ ਅੰਗ ਪਹਿਲੇ ਰੂਪ ਵਿਚ ਆ ਸਕਣਗੇ।

ਸੀਐੱਸਆਈਓ ਦੀ ਲੈਬ ਵਿਚ ਖ਼ਾਸ ਕਿਸਮ ਦੇ ਪੀੜਤਾਂ ਤੇ ਮਰੀਜ਼ਾਂ ਲਈ ਉਚੇਰੀ 3ਡੀ ਪ੍ਰੀਡਿਕਟ ਪੇਸ਼ੈਂਟ ਸਪੈਸੀਫਿਕ ਮੈਡੀਕਲ ਇੰਪਲਾਂਟਸ (ਪੀਐੱਸਆਈ) ਤਕਨੀਕ ਵਿਕਸਤ ਕੀਤੀ ਹੈ। ਇਸ ਦੇ ਸਦਕਾ ਹਾਦਸਿਆਂ ਵਿਚ ਜ਼ਖਮੀ ਹੋਣ ਵਾਲੇ ਫੱਟੜ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਖ਼ਾਸ ਤਕਨੀਕ ਸਦਕਾ ਪਹਿਲਾਂ ਜਿਹੇ ਰੂਪ ਵਿਚ ਢਾਲਿਆ ਜਾ ਸਕੇਗਾ। ਸੁੱਕਰਵਾਰ ਨੂੰ ਸੀਐੱਸਆਈਓ ਮੁੰਬਈ ਦੀ ਨਿੱਜੀ ਕੰਪਨੀ ਫੋਬਸ ਐਂਡ ਕੰਪਨੀ ਨੂੰ ਇਹ ਤਕਨੀਕ ਸੌਂਪ ਦਿੱਤੀ ਜਾਵੇਗੀ। ਇਸ ਤਕਨੀਕ ਸਦਕਾ ਵਿਦੇਸ਼ਾਂ ਤੋਂ ਸਸਤਾ ਇਲਾਜ ਸੰਭਵ ਹੋ ਸਕੇਗਾ। ਇਵੇਂ ਹੀ ਡਾ. ਸੁਰਿੰਦਰ ਸਿੰਘ ਸੈਣੀ, ਮੁਖੀ ਬਿਜਨਸ ਇਨੋਵੇਟਿਵ ਐਂਡ ਪ੍ਰਾਜੈਕਟ ਪਲਾਨਿੰਗ ਨੇ ਦੱਸਿਆ ਕਿ ਹਾਦਸੇ ਮਗਰੋਂ ਸਰੀਰ ਦੇ ਅੰਗ ਪਹਿਲੇ ਰੂਪ ਵਿਚ ਆ ਸਕਣਗੇ।

CSIR-CCMB workshop on genome for providing personalised healthcare

CSIR-CCMB



Indian and US researchers, who work to understand the genetic basis of diseases among various ethnic populations from different parts of the world, participated in a workshop organised by CSIR-Centre for Cellular and Molecular Biology (CCMB), Hyderabad. The workshop focussed on understanding genome information in a better way. Improved information on genome can help fine-tune genome-assisted healthcare, and could even lead to precise, personalized, more effective and economical approaches to healthcare. The three-day workshop, started on January 16, was attended by around 200 researchers, many of whom are promising PhD scholars from research institutes, universities, hospitals and life science companies in India and the US.

17th January, 2020

This workshop is arranged by the Indo-US Science and Technology Forum, supported by the Department of Science and Technology, India, and Department of State, USA, with an aim to create fruitful collaborations between the two countries. Director CCMB, Dr Rakesh K Mishra says, “Variation in our population and differential susceptibility to diseases and response to treatment methods have been known. With genome information, we can now think of precision and personalized approach for more effective and economical approaches to healthcare. This meeting brings experts from India and the US to discuss the latest findings. This is likely to help us fine-tune our way forward towards genome-assisted healthcare.” These researchers believe that one size doesn’t fit all – especially in healthcare. Much of it depends on the genetic make-up and the surroundings, which modify the genes of a person – what is called as the epigenetics. As genetics of populations in different parts of the world differ from each other, there is immense interest among researchers and governments to look at

genetic details of many non-communicable diseases. Researchers are deliberating on genetic and epigenetic basis of different forms of cancer, diabetes, heart and neurological diseases in South Asia and the US. It will also have focused discussions on the promise of personalized medicine, and advancements in technologies to make it possible.

Dr Thangaraj from CCMB and Dr Keshav Singh from the University of Alabama, Birmingham – the convenors of the meeting from the two countries – mention that most of the data that as of now is based on European populations. For the field of personalized medicine to progress, it is imperative to understand population-specific genetics.

CSIR-IMTECH workshop on fermentation basics

CSIR-IMTECH

17th January, 2020

The CSIR-Institute of Microbial Technology (IMTECH) conducted a five-day workshop on the fundamentals of Fermentation Process Development. The workshop immensely helped participants acquire fundamental understanding of the relationship between process design and product quality in fermentation. Twenty one participants from different academic and research institutes as well as from industry were part of this workshop, which started from January 13 and concluded on January 17. This workshop, apart from building the knowledge base of participants on the subject, is likely to help increase employability and entrepreneurial potential of the participants in the biotechnology and pharmaceutical industries.

Dr. Anirban Roy Choudhury, the co-ordinator of the workshop, said that the participants were given hands-on training in pilot-scale fermenters. The participants were given exposure to critical process parameters needed to achieve a robust fermentation process. The major topics covered during the workshop included microbial cell growth and product formation kinetics, the critical components of an industrial bioreactor, and scale-up and downstream processing of fermentation processes. The participants were mentored by the experts in the area of biochemical engineering. The workshop was organized by the Biochemical Engineering Research and Process Development Centre (BERPDC) under its 'Skill Development' mandate to impart and upgrade skills of the young researchers and students in Fermentation Technology.

Dr Sanjay Kumar, Director, CSIR-Institute of Himalayan Bioresource Technology (IHBT), Palampur, who was also the chief guest, inaugurated the workshop on January 13 and Prof U. C. Banerjee, Head, Pharmaceutical Technology, National Institute of Pharmaceutical

Education and Research (NIPER), Mohali, gave the inaugural lecture on “Mass transfer in bioreactors”. Dr Manoj Raje, Acting Director, CSIR-IMTECH, while welcoming the participants gave a brief background of CSIR-IMTECH & BERPDC and said, "The major objective of the workshop will be to impart training on fermentation principles and engineering fundamentals of growing microorganisms in a bioreactor to express industrially important biomolecules."

CSIR-IMTECH, established in 1984, is a national centre for excellence in microbial sciences. IMTECH's vision is to discover and develop translational products and new drugs to address key unmet medical needs.

Need to conserve fuel for nt'l development: Uniyal

CSIR-IIP

17th January, 2020

Considering the huge amount spent on importing the bulk of the nation's crude oil demand, citizens should contribute to the welfare of the nation by ensuring their bit for conservation of fuel. The State's Agriculture and Horticulture minister Subodh Uniyal said this while inaugurating the Saksham Mahotsav at CSIR-Indian Institute of Petroleum here on Thursday.

The programme organised by Petroleum Conservation Research Association (PCRA), Ministry of Petroleum and Natural Gas along with oil industries is being observed from January 16 to February 15 with the theme 'Save Fuel and Energy to Save the Environment'.

Addressing the gathering, the cabinet minister said that India is importing 80 per cent of its crude oil and spending a huge amount of money for this. Appreciating the efforts made by PCRA and the CSIR-IIP in conserving the energy, he appealed the public to give their best to save the fuel for the progress of country. He emphasised that such type of programmes will educate the people to save energy.

Expressing his views on the occasion, the chancellor of UPES, SJ Chopra said that as per recent studies, the energy requirement will double by the year 2040 and that it is essential to save energy. He also shared some tips for conservation of energy.

Later, the CSIR-IIP director Anjan Ray interacted with the students of various schools and discussed about the fuel and its conservation related solutions.

State level coordinator of oil industry Manoj Jayant informed about the different activities to be conducted during the month and also gave some useful tips to save energy.

An exhibition was also organised wherein room temperature bio-diesel, electric vehicle and PNG burner developed by CSIR-IIP were showcased. A human chain was formed and a Saksham vehicle was also flagged off on the occasion.

CSIR-IHBT

17th January, 2020

Sirmaur admn to tie up with CSIR for medicinal, aromatic crops

TRIBUNE NEWS SERVICE**SOLAN, JANUARY 16**

In a bid to save rare herbs, the Sirmaur district administration will coordinate with Palampur-based CSIR-Institute of Himalayan Bioresource Technology to undertake cultivation and development of medicinal and aromatic crops.

Sirmaur DC RK Pruthi said MoUs would be signed

with the institute for the development of medicinal and aromatic crops, rare, threatened and endangered plant species as well as bamboo plantation-related interventions.

He said discussions had already been held with the scientists from the institute for undertaking research and development works over these issues.

Apart from this, enter-

Discussions has already been held with the scientists from the institute for undertaking research and development works

prise development for herbal incense cones, wine making from peach and cereal and millet bars making activities would also be part of these MoUs.

He said the CSIR-IHBT would also explore scope for

making home-compost machines that could help deal with the problem of garbage management in the district.

Pruthi said one lakh saplings of different varieties would be planted in each development block. Apart from this, one lakh lemon saplings would also be planted under MGN-REGA.

He said Navratan Theme

Park would also be established that would have nine components — Triveni, Panchvati, air purifier, water purifier, mosquito-repellent plants, snake-repellent plants, dant van, fodder plants and kitchen clinic plants.

As part of his "Vision-2020", the Deputy Commissioner said efforts would be made to conserve the environment and new

interventions such as zero waste tourist centre having traditional and modern kitchen, toilet, cafe, wi-fi, solar system and rooftop rain harvesting system would be established for tourists and visitors at Bag Pashog.

The Centre would also have mahila mandal store where they would sell domestic and handmade products and local products.

Published in:
The Tribune

CSIR-CSIO

17th January, 2020

23 foreigners participate in meet held by CSIO

TIMES NEWS NETWORK

Chandigarh: Central Scientific Instruments Organization (CSIO), Chandigarh, on Thursday conducted a management development programme on operation and maintenance of biomedical equipment for international participants.

As many as 23 participants from Mauritius, Egypt, Bhutan, Burundi, Zambia, Uzbekistan, Sri Lanka, Oman, Kenya, Sudan, Tanzania, Uganda, Ethiopia, Syria, Rwanda and Nigeria participated in the seminar that was held under the aegis of Union ministry of external affairs.

The program covered operation, maintenance and repair aspects of biomedical equipment.

CSIO has been sharing the knowledge of analytical equipment for these countries under Indian Technical and Economic Cooperation Programme (ITEC) category.

Such programmes boost international relations and the participants get both technical and cultural knowledge the country.

These participants were trained on the operation and maintenance aspects of variety of analytical equipment.

The biomedical department of CSIO is conducting research and development on anesthesia workstation, above elbow prosthesis, electronic knee, batch chemistry analyzer, control system for micro-level motions etc.

Besides, on site and in-house test/calibration services for medical instruments are being provided to the valued customers.

Published in:

The Times of India

CSIR-CSMCRI

16th January, 2020

ભાવનગરની સેન્ટ્રલ સોલ્ટ ઈન્સ્ટીટ્યૂટની મુલાકાત લેતા સોલાપુર યુનિવર્સિટીના વિદ્યાર્થીઓ સમુદ્રી પર્યાવરણીય સંશોધન અને મરીન સાયન્સના સંશોધનમાં અનેક તક ઉપલબ્ધ

CSMCRIના સિનિયર પ્રિન્સિપલ સાયન્ટિસ્ટ ડો. રવિકુમાર થોરાટ દ્વારા વિદ્યાર્થીઓને ઊંડાણપૂર્વક અપાયેલ માહિતી

। ભાવનગર ।

કાઉન્સિલ ઓફ સાયન્ટિફિક એન્ડ ઈન્ડસ્ટ્રીઅલ રિસર્ચ (CSIR) દ્વારા 'જીજ્ઞાસા' પ્રોગ્રામ અંતર્ગત હેઠળ પુણ્યશ્લોક અહિલ્યાદેવી હોલકર સોલાપુર યુનિવર્સિટીના પોસ્ટ ગ્રજ્યુએટના વિદ્યાર્થીઓ તથા પ્રાધ્યાપકો તાજેતરમાં ભાવનગરમાં આવેલ CSIR ની પ્રયોગશાળા એટલે સેન્ટ્રલ સોલ્ટ અને મરીન કેમિકલ્સ રિસર્ચ ઈન્સ્ટીટ્યૂટ (CSMCRI) ની મુલાકાતે આવ્યા હતા.

CSMCRIના સિનિયર પ્રિન્સિપલ સાયન્ટિસ્ટ ડો. રવિકુમાર થોરાટ દ્વારા વિદ્યાર્થીઓને સમુદ્રી પર્યાવરણીય સંશોધન અને મરીન સાયન્સમાં આવનારી સંશોધન તકો વિષે ઊંડાણ પૂર્વક માહિતી આપવામાં આવી હતી. આ ઉપરાંત, વિદ્યાર્થીઓને વાતાવરણમાં થતા હવાના પ્રદુષણ વિશે ખુબ જ ઉપયોગી માહિતી આપવામાં આવી હતી. જેમાં હવાનું પ્રદુષણ થવાના મુખ્ય કારણો,



વાહનો અને ઔદ્યોગિક પ્રદુષણ અને તેના લીધે માનવજાત અને જીવ સુષ્ટિ પર થતી અસરો વિશે ઊંડાણપૂર્વક વૈજ્ઞાનિક માહિતી આપવામાં આવેલ હતી. આ ઉપરાંત હવાનું પ્રદુષણ માપવામાં ઉપયોગ થતા ઈન્સ્ટ્રુમેન્ટનો લાઈવ ડેમો પણ બતાડવામાં આવ્યો હતો.

હાલ માં CSIR -CSMCRI દ્વારા બનાવામાં આવેલ કન્સ્ટ્રક્ટેડ વેટલેન્ડ વિશે વિદ્યાર્થીઓને માહિતગાર કરવામાં આવ્યા

હતા. આ કન્સ્ટ્રક્ટેડ વેટલેન્ડ્સ એ કૃત્રિમ વેટલેન્ડ છે જેનો ઉપયોગ સપાટીના પાણી, મ્યુનિસિપલ ગંદાપાણી, ઘરેલું ગટર, રિફાઈનરી ફ્લુઅડ્સ અથવા લેન્ડફિલ લિચેટમાં કાર્બનિક, અકાર્બનિક દૂષણોની શુદ્ધિકરણ માટે થાય છે. CSMCRI ઈન્સ્ટીટ્યૂટ દ્વારા ઉત્પન્ન થતા સીવેજ વોટર ને સંસ્થામાં માં શુદ્ધ કરી તે પાણી ને ફરી ઉપયોગ માં લય શકાય તે માટે આ પ્લાન્ટ બનાવામાં આવ્યો છે. આ



ટેકનોલોજીની મદદથી સંસ્થામાં માં જ પ્રતિદિન ૩૦૦૦ લિટર પાણીનું શુદ્ધિકરણ થાય છે. આ ટેકનોલોજી ની વિશેષતા એ છે કે જેમાં કોઈ પણ જાતના કેમિકલ વગર અને ઓછા ખર્ચ માં પાણી નું શુદ્ધિકરણ થાય છે.

CSMCRI સંસ્થાના સોલ્ટ ફાર્મ પર વિદ્યાર્થીઓને મીઠાના શુદ્ધિકરણ અને બીજી વિવિધ CSMCRI દ્વારા કાર્યરત ટેકનોલોજી પર વિજિટ કરી ને વિદ્યાર્થીઓને

પ્રત્યક્ષ રીતે વિજ્ઞાન અને ટેકનોલોજી ની પરિભાષા દ્વારા માહિતગાર કરવામાં આવ્યા હતા અને વિદ્યાર્થીઓના પ્રશ્નો નું વૈજ્ઞાનિક નિરાકરણ પણ કરવામાં આવ્યું હતું જેમાં વિદ્યાર્થીઓએ ખુબ જ ઊંડાણપૂર્વક રસ બતાવ્યો હતો. મુલાકાતે આવેલા યુનિવર્સિટી ના પ્રાધ્યાપક ડો.વિનાયક ધુલાપ દ્વારા વિદ્યાર્થીઓને આવી તક આપવા બદલ CSMCRI સંસ્થાનો ખુબ આભાર વ્યક્ત કર્યો હતો.

Published in:

Prabhat Khabar

Please Follow/Subscribe CSIR Social Media Handles



[CSIR INDIA](#)



[CSIR_IND](#)



[CSIR India](#)